

भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
आर्थिक कार्य विभाग

लोक सभा
तारांकित प्रश्न संख्या 11

(जिसका उत्तर सोमवार, 3 फरवरी, 2025/14 माघ, 1946 (शक) को दिया जाना है)

भारतीय रुपये का अवमूल्यन

11. श्री एंटो एन्टोनी:

क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) वे कौन-कौन से कारक हैं जिनके कारण हाल ही में भारतीय रुपये का तेजी से अवमूल्यन हुआ है;
- (ख) महंगाई और आम नागरिक के जीवनयापन की लागत पर इस अवमूल्यन के प्रभाव को कम करने के लिए सरकार द्वारा क्या उपाय किए गए हैं;
- (ग) क्या सरकार की 2010 में अपनाई गई विनिमय दर नीति ढांचे पर फिर से विचार करने की योजना है; और
- (घ) यदि हां, तो प्रस्तावित बदलावों सहित तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर
वित्त मंत्री (श्रीमती निर्मला सीतारामन)

(क) से (घ) : विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

"भारतीय रुपये का अवमूल्यन" के बारे में श्री एंटो एन्टोनी द्वारा
उठाए गए लोक सभा तारांकित प्रश्न संख्या 11 के उत्तर में संदर्भित विवरण
जिसका उत्तर दिनांक 3 फरवरी, 2025
को दिया जाना है

(क) भारतीय रुपये (आईएनआर) का कोई अवमूल्यन नहीं हुआ है, जो स्थिर- विनियम दर व्यवस्था की विशेषता है। भारतीय रुपये का मूल्य बाजार द्वारा निर्धारित होता है, जिसका कोई लक्ष्य अथवा विशिष्ट स्तर या बैंड नहीं होता है। भारतीय रुपये की विनिमय दर को डॉलर सूचकांक में उतार-चढ़ाव, पूंजी प्रवाह के रुझान, व्याज दरों का स्तर, कच्चे तेल की कीमतों

में उतार-चढ़ाव, चालू खाता घाटा आदि जैसे विभिन्न घरेलू और वैश्विक कारक प्रभावित करते हैं।

अमेरिकी डॉलर (यूएसडी) की तुलना में भारतीय रुपये की हालिया स्थिति संबंधी विवरण निम्नलिखित हैं:

- कैलेंडर वर्ष 2024 की अंतिम तिमाही की शुरुआत से, अमेरिकी चुनावों के परिणामों संबंधी अनिश्चितताओं के कारण अन्य एशियाई मुद्राओं के साथ-साथ भारतीय मुद्रा का डॉलर की तुलना में मूल्यह्रास हुआ। अमेरिकी डॉलर सूचकांक में 1 अक्टूबर, 2024 से 27 जनवरी, 2025 के दौरान 6.5% की वृद्धि हुई, जबकि सभी प्रमुख एशियाई मुद्राओं में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले गिरावट आई। इस अवधि के दौरान भारतीय रुपये में 2.9 प्रतिशत की गिरावट आई है, जो हांगकांग डॉलर को छोड़कर प्रमुख एशियाई मुद्राओं में सबसे कम है। इस अवधि के दौरान दक्षिण कोरियाई वॉन, इंडोनेशियाई रुपिया और मलेशियाई रिंगिट में क्रमशः, 8.1 प्रतिशत, 6.4 प्रतिशत और 5.9 प्रतिशत की गिरावट आई। इसके अलावा, इस अवधि के दौरान सभी जी-10 मुद्राओं में भी 5.5 प्रतिशत से अधिक की गिरावट आई, जिसमें जापानी येन, ब्रिटिश पाउंड और यूरो में क्रमशः 7.0 प्रतिशत, 6.6 प्रतिशत और 5.8 प्रतिशत की गिरावट आई।
- अमेरिका और भारत के बीच इंटररेस्ट रेट डिफ़रेंशियल में कमी के कारण भी भारतीय रुपये पर दबाव बना। उपरोक्त अवधि के दौरान अमेरिकी 10-वर्षीय प्रतिफल में 75 बीपीएस की वृद्धि हुई, जबकि भारतीय जेनेरिक 10-वर्षीय प्रतिफल अपेक्षाकृत स्थिर रहा।
- दिनांक 1 अक्टूबर, 2024 से 27 जनवरी, 2025 के दौरान भारतीय बाजारों से लगभग 19.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर के विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई) बहिर्वाह के कारण अमेरिकी डॉलर की तुलना भारतीय रुपये में गिरावट आई।
- नवंबर 2024 के लिए 31.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर के व्यापार घाटे ने भी भारतीय रुपये पर दबाव बनाया।

(ख) मुद्रा के मूल्यह्रास से निर्यात में प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ने की संभावना है, जिसका अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। दूसरी ओर, मूल्यह्रास से आयातित वस्तुओं की कीमतें बढ़ सकती हैं। विनिमय दर के मूल्यह्रास का घरेलू कीमतों पर समग्र प्रभाव अंतरराष्ट्रीय वस्तुओं की कीमतों के घरेलू बाजार में लागू होने की सीमा पर निर्भर करता है। इसके अलावा, अर्थव्यवस्था में आयात भी, अंतरराष्ट्रीय बाजार में वस्तुओं की मांग और आपूर्ति, व्यापारयोग्य वस्तुओं की प्रकृति (अर्थात् आवश्यक अथवा सुख-सुविधा की वस्तुएं), माल ढुलाई लागत, वैकल्पिक वस्तुओं की उपलब्धता, आदि सहित विभिन्न कारकों पर निर्भर करता है। इस प्रकार, आयात की लागत पर विनियम दर में उतार-चढ़ाव के प्रभाव और परिणामस्वरूप घरेलू मुद्रास्फीति तथा उपभोक्ताओं के जीवनयापन की लागत पर इसके प्रभाव को अलग नहीं किया जा सकता।

(ग) और (घ): विनिमय दर प्रबंधन के प्रति दृष्टिकोण सुसंगत और सुस्पष्ट रहा है, जिसके संदर्भ में रुपये का मूल्य बाजार द्वारा निर्धारित होता है, जिसका कोई लक्ष्य या विशिष्ट स्तर या बैंड नहीं होता है।
